nwda.gov.in

साहिबी नदी में कैसे लौटेगी जान?

NBT ने दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान में इस नदी के निशानों को टटोला

Poonam.Gaur@timesgroup.com

NBT

नदी सूखने के बाद इसके आसपास बसे गांवों में अब पानी की कमी हो रही है

नई दिल्ली: पिछले कुछ महीनों से राजधानी में यमुना के अलावा साहिबी नदी को बचाने की मुहिम चल रही है। राजस्थान से हरियाणा होते हुए दिल्ली आने वाली इस नदी में 80 के दशक से ही बहाव नहीं है। एनबीटी ने दो दशक पहले सूख चुकी इस नदी के निशान ढूंढने की कोशिश की। दूसरी तरफ ग्रामीणों के अनुसार, नदी अब लौटी तो तबाही होगी। नदी के रास्तों पर अतिक्रमण हो चुका है।

साहिबी, सीकर (राजस्थान) से निकलकर जयपुर, अलवर, हरियाणा होते हुए दिल्ली पहुंचती थी। यह मुख्य रूप से बरसाती नदी थी और बारिश में दौरान इसका तेज प्रवाह होता था। नदी में साल 1845, 1873, 1917, 1930, 1933, 1960, 1964, 1972 और 1977 में भारी बाढ़ आई। बाढ़ का पानी न सिर्फ नजफगढ़, बल्कि जनकपुरी तक भर गया था। 64 की बाढ़ के बाद इस नदी में पानी के बहाव को कंट्रोल करने के लिए कुछ बांध बनाए गए। नजफगढ़ के ढासा में अब भी नदी के पानी के स्तर को दिखाने वाला स्केल है। नजफगढ़ झील को इसी नदी से पानी मिलता था और नजफगढ़ नाले के रूप में यह आगे बढ़ते हुए यमुना में मिलती थी। नदी में पानी न आने के बाद नजफगढ़ नाले में शहर की कॉलोनियों के गंदे नाले गंदगी घोलते रहे और यह साहिबी ने नजफगढ़ नाला बन गई।

बांध में अब भी बरसाती पानी

नदी के बहाव को कंट्रोल करने के लिए दिल्ली-जयपुर हाइवे पर धारूहेड़ा के पास बांध में अब भी बरसाती पानी एकत्रित होता है। एक्सपर्ट के अनुसार, यह सीवरेज का पानी नहीं है। यह इस बात का सबूत है कि प्रयासों से नदी को जिंदा किया जा सकता है।

खरबूजे की खेती नहीं होती

कोटकासिम के रवि प्रकाश अग्रवाल कहते हैं कि नदी के न आने के बाद से पानी का स्तर काफी नीचे चला गया है। यहां अब खरबूजे और तरबूज की खेती नहीं होती। नदी के रास्तों पर कब्जा हो गया है। नदी वापस आई तो भारी तबाही होगी। कुंए बंद होते चले गए।

जगी उम्मीद... नदी फिर से जिंदा होगी

साहिबी नदी पर हम 10 से 12 साल से काम कर रहे हैं। दिल्ली में इस पर काम शुरू हुआ है, बात होनी शुरू हुई है। गूगल मैप में भी नदी को अब उसके नाम की पहचान मिली है। एनजीटी ने नजफगढ़ झील के लिए दिल्ली और हरियाणा को मिलकर एक एनवायरमेंटल प्लान तैयार करने को कहा है ताकि झील को संरक्षित किया जा सके। इसके बनने से झील के पानी के सोर्स पता होंगे और उनपर भी काम शुरू होगा। उम्मीद जगी है कि नदी एक बार फिर से जिंदा होगी। नदी के बहाव क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त करना होगा।

-डॉ सुमित डूकिया, असिस्टेंड प्रफेसर, स्कूल ऑफ एनवायरमेंट मैनेजमेंट, आईपी यूनिवर्सिटी